

## नाट्यशास्त्र में रस सिद्धांत: एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण

डॉ. भरतकुमार जे. ओडेदरा

हिंदी विभाग,

उमा आर्ट्स एवं नाथीबा कोमर्स महिला महाविद्यालय, गांधीनगर।

### शोध-सार :

‘नाट्यशास्त्र’ भारतीय कला साहित्य नृत्य और नाटक का आधारभूत ग्रंथ है जिसकी रचना भरत मुनि (लगभग 200 ईसा पूर्व से 200 ई के बीच) द्वारा की गई है। यह केवल अभिनय की पुस्तक नहीं बल्कि रंगमंच का एक संपूर्ण वैज्ञानिक और सौंदर्य शास्त्रीय ग्रंथ है। भरत मुनि ने रस को ‘आस्वाद’ के रूप में परिभाषित किया है। उनका मानना था कि नाटक का प्राथमिक उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं बल्कि दर्शन को भाव जगत में प्रविष्ट कराकर ‘ब्रह्मानंद सहोदर’ की अनुभूति करना है। नाट्य शास्त्र के छठे अध्याय में भरत मुनि ने रस उत्पत्ति का सूत्र दिया है।

**"विभावानुभाव व्यभिचारि संयोगाद्रसनिष्पत्तिः ।"**

(विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारी भावों के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।)

रस के चार प्रमुख तत्व हैं। भरत मुनि ने मूलतः आठ रस माने थे, लेकिन बाद में ‘शांत’ रस को जोड़कर नौ रस माने जाते हैं।

**बीज-शब्द : नाट्यशास्त्र, रस, भरत मुनि, अभिनय, आनंद, भाव आस्वाद, संयोग, निष्पत्ति।**

अनेक शास्त्रों और विज्ञानों की भांति भाषा संबंधी अध्ययन भी अत्यंत प्राचीन काल से होता आया है। भारत की इस क्षेत्र में गति अप्रितम रही है, इस बात को कहीं चोटी के भाषा शास्त्रियों ने स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया है। इतना ही नहीं, आधुनिक भाषा विज्ञान पाणिनि के ही प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रभाव के प्रकाश में विकसित हुआ है।<sup>1</sup> आधुनिक अध्ययन का आरंभ 19वीं सदी के मध्य से होता है।

**रस सिद्धांत (Rasa Theory)** नाट्यशास्त्र का हृदय है, जो कला के माध्यम से दर्शक या पाठक के मन में आनंद की अनुभूति को परिभाषित करता है।

भरत मुनि ने रस को ‘आस्वाद’ या ‘आनंद’ के रूप में परिभाषित किया है। उनका मानना था कि नाटक का प्राथमिक उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि दर्शक को भाव-जगत में ले जाकर ‘ब्रह्मानंद सहोदर’ (ब्रह्म के समान आनंद) की अनुभूति कराना है।

**रस सूत्र (Rasa Sutra):** नाट्यशास्त्र के छठे अध्याय में भरत मुनि ने रस की उत्पत्ति के लिए प्रसिद्ध सूत्र दिया है:

**"विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद् रसनिष्पत्तिः।"**

(विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।)

**रस के चार प्रमुख तत्व:**

#### • स्थायी भाव :

सहृदयके मन में जो मनोविकार वासना रूप में सदा विद्यमान रहता है तथा जिसे विरुद्ध या अविरुद्ध भाव दबा नहीं सकता उसे स्थाई भाव कहते हैं।<sup>2</sup> यह यह भाव जन्मगत होते हैं। यह हमेशा सुषुप्त अवस्था में रहते हैं।

मनुष्य मात्र में समान रूप से विद्यमान रहते हैं और यही रस का मूल कारण बनते हैं। आचार्यों ने इन स्थाई भाव की संख्या 9 मानी है।

1. **शृंगार (Love/Erotic):** - प्रेम
2. **हास्य (Comedy/Laughter):** - हँसी
3. **करुण (Pathos/Sorrow):** - दुःख या दया
4. **रौद्र (Fury/Anger):** - क्रोध
5. **वीर (Heroism):** - उत्साह या बहादुरी
6. **भयानक (Fear/Terror):** - डर
7. **बीभत्स (Disgust/Aversion):** - घृणा
8. **अद्भुत (Wonder/Amazement):** - आश्चर्य
9. **शांत (Peace/Tranquility):** - शांति (स्थायी भाव: निर्वेद)

• **विभाव :**

विभाव का अर्थ है- कारणभावों को जगाने वाले कारण (जैसे- नायक, नायिका, वातावरण)। विभाव रस की उत्पत्ति कारण भूत है। इसी कारण यह रस सामग्री या रस के उपकरण कहे जाते हैं। आचार्य विश्वनाथ के अनुसार लोक या संसार में रति हाथ अशोक आदि स्थायाभीभावो को जागृत करने वाले होते हैं वे जब काव्य या नाटक में वर्णित होते हैं तब विभाव कहे जाते हैं।

विभाव के दो भेद माने गए हैं - आलंबन विभाव और उद्दीपन विभाव।

• **अनुभाव :**

आश्रय की विशेषताएं जो उसके हृदय में रति आदि स्थाई भाव को प्रकाशित व्यक्त करती है अनुभव कही जाती है यह अनुभव या बाह्य चेष्टाएं रति आदि स्थाई भाव के बाद परिणाम स्वरूप उत्पन्न या प्रगति होती है अर्थात् जो भाव के कार्य है अथवा इसके द्वारा रति इत्यादि स्थाई भाव का अनुभव होता है वह अनुभाव कहे जाते हैं उदाहरण स्वरूप आश्रय दुष्यंत के हृदय में आलंबन शकुंतला को देखकर तथा उद्दीपन विभाव से उदित उत्तेजित होकर जो बाह्य सिस्टर प्रकट होती है यथा ध्रुवीक शॉप नेत्र मिलन आदि वह उसके रति भाव को साक्षात् प्रकट करती है इन्हीं भाव प्रतीकरण की विशेषताओं को अनुभव कहा जाता है। अनुभव के चार रूप हैं- आंगिक, वाचिक, आहार्य, सात्विक। शरीर संबंधी आश्रय की चेस्ताओ को आंगिक वार्तालाप की चेस्ताओ को वाचिक वेशभूषा अलंकरण आदि को आहार्य तथा सत्व योग से उत्पन्न काईकचेस्ताओको सात्विक अनुभाव कहा जाता है। सात्विक अनुभाव की संख्या 8 मानी गई है<sup>3</sup>

आंगिक, वाचिक तथा आहार्य अनुभावों को 'यत्यज' कहा जाता है। नाटक में इसके प्रगटीकरण के लिए आश्रय को यत्न (प्रयत्न) करना पड़ता है तथा काव्य में इन्हें शब्दों के माध्यम से प्रकट किया जाता है। सात्विक अनुभाव स्वयंफूत होते हैं। इनके प्रगटीकरण के लिए यत्न (प्रयत्न) नहीं करना पड़ता इन्हें यत्नों द्वारा प्रकट नहीं किया जा सकता और ना रोका जा सकता है यह स्वतः प्रगट होते हैं।

• **संचारिभाव :**

चितवृतियों जो स्वभावतः तो अस्थिर रहती है- 'संचारिभाव' कही जाती है। चितवृतियों या मनोविकार आश्रय अथवा आलंबन के मन में जागती डूबती रहती है। संचारी भाव स्थाई भाव को रस की अवस्था तक पहुंचने में सहायक होते हैं किंतु सतत साथ नहीं रहते यह जल तरंगवत उठने एवं विलीन होते रहते हैं। संचारी भाव को व्यभिचारीभाव भी कहा जाता है क्योंकि यह प्रत्येक स्थाई भाव के साथ अनुकूल बनाकर उनके सहायक बनते हैं।

संचारी भाव शरीर के धर्म न होकर मनोविकार मात्र है और मनोविकारों की संख्या निश्चित करना संभव नहीं है किंतु आचार्य ने इनकी पहचान बनाकर सुविधा की दृष्टि से 33 संचारी भाव बताए हैं - हर्ष, विशद, तरस, लज्जा, ग्लानि, चिंता, शंका, असूया, अमर्ष, मोह, गर्व, उत्सुकता, उग्रता, चपलता, दीनता, जड़ता, आवेग, निर्वेद, धृति, मति, विबोध, वितर्क, आलस्य, निद्रा, स्वप्न, स्मृति, मद, उन्माद, अवहित्या, अपस्मार, व्याधि, मरण आदि संचारी भाव है।<sup>4</sup>

## . नृत्य, नाटक और साहित्य में रस (Application)

- **नाटक (Drama):** अभिनेता (पात्र) अभिनय द्वारा विभाव-अनुभाव का प्रयोग करते हैं ताकि दर्शक के मन में उस रस को जगाया जा सके।
- **नृत्य (Dance):** भरतनाट्यम जैसी नृत्य शैलियों में 'अभिनय' (आंगिक, वाचिक, आहार्य, सात्विक) के द्वारा कथा और रस को व्यक्त किया जाता है। नृत्य में ताल और भाव मिलकर रस निष्पत्ति करते हैं।
- **साहित्य (Literature):** काव्य या गद्य में भी वर्णनों के माध्यम से पाठक 'सहृदय' (समान हृदय वाला) बनकर उन भावों का आनंद लेता है<sup>5</sup>

### 1. रस का 'रासायनिक' समीकरण

भरत मुनि ने रस की निष्पत्ति के लिए एक प्रसिद्ध सूत्र दिया है:

वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में इसे एक **प्रतिक्रिया (Reaction)** के रूप में देखा जा सकता है:

- **विभाव (Stimulus):** बाहरी कारण या उद्दीपन (जैसे नायक-नायिका, वातावरण)।
- **अनुभाव (Response):** शारीरिक प्रतिक्रियाएं (जैसे पसीना आना, आँखों में आँसू, सिहरन)।
- **व्यभिचारी भाव (Transient Emotions):** क्षणिक मानसिक अवस्थाएं जो मुख्य भाव को पुष्ट करती हैं।
- **स्थायी भाव (Dominant State):** मन में पहले से मौजूद अवचेतन संस्कार।  
जब ये तत्व मिलते हैं, तो मस्तिष्क में एक विशिष्ट 'न्यूरोकेमिकल' परिवर्तन होता है, जिसे हम **रस** (आनंदानुभूति) कहते हैं।

### 2. न्यूरोसाइंस और रस (Neuroscience of Rasa)

आधुनिक विज्ञान के अनुसार, जब हम कोई दृश्य देखते हैं, तो हमारा **Mirror Neurons System** सक्रिय हो जाता है।

- **सहानुभूति (Empathy):** जब मंच पर अभिनेता रोता है, तो दर्शक के मस्तिष्क में भी वही न्यूरोन्स सक्रिय होते हैं जो दुःख के समय होते हैं।
- **कैथार्सिस (Catharsis):** दुःखद दृश्यों को देखकर भी जो आनंद (करुण रस) मिलता है, वह मस्तिष्क में **Endorphins** और **Oxytocin** के साव के कारण होता है, जो तनाव को कम करते हैं<sup>6</sup>

### 3. रस और उनके मनोवैज्ञानिक आधार

वैज्ञानिक दृष्टि से प्रत्येक रस एक विशिष्ट 'इमोशनल स्टेट' और 'हार्मोनल रिलीज' से जुड़ा है:

रस	स्थायी भाव	मनोवैज्ञानिक/शारीरिक प्रतिक्रिया
शृंगार	रति (प्रेम)	डोपामाइन और ऑक्सीटोसिन का स्तर बढ़ना।
रौद्र	क्रोध	एड्रेनालिन (Adrenaline) का प्रवाह, हृदय गति बढ़ना।
भयानक	भय	'Fight or Flight' मोड का सक्रिय होना (Cortisol)
बीभत्स	जुगुप्सा (घृणा)	इंसुला (Insula) मस्तिष्क क्षेत्र का सक्रिय होना।
वीर	उत्साह	आत्मविश्वास और उच्च ऊर्जा का संचार।

### 4. साधारणीकरण (Universalization)

यह रस सिद्धांत का सबसे वैज्ञानिक पक्ष है। इसका अर्थ है 'Personal से Universal' होना। जब दर्शक नाटक देखता है, तो वह अपनी व्यक्तिगत पहचान (जैसे नाम, पद, चिंताएं) भूलकर पात्र के साथ एकाकार हो जाता है। आधुनिक मनोविज्ञान में इसे 'Flow State' या 'Self-Transcendence' कहा जाता है, जहाँ व्यक्ति का 'अहं' (Ego) शांत हो जाता है और वह केवल अनुभव का हिस्सा बन जाता है।

#### 5. रस और स्वास्थ्य (Therapeutic Value)

रस सिद्धांत केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि **Art Therapy** का आधार है:

- यह भावनाओं को 'चैनल' (Channelize) करने का मार्ग प्रदान करता है।
- दबी हुई भावनाओं (Suppressed Emotions) को बाहर निकालने में मदद करता है।
- मानसिक संतुलन (Homeostasis) बनाए रखने में सहायक है।

#### निष्कर्ष:

नाट्यशास्त्र का रस सिद्धांत यह मानता है कि कला के माध्यम से मनुष्य अपने मानसिक और आध्यात्मिक भावों का परिष्कृत रूप अनुभव करता है, जो उसे सांसारिक दुखों से ऊपर उठाता है। भरत मुनि द्वारा रचित **नाट्यशास्त्र** केवल एक कलात्मक ग्रंथ नहीं है, बल्कि यह मानवीय मनोविज्ञान (Psychology) और तंत्रिका विज्ञान (Neuroscience) का एक प्राचीन और व्यवस्थित दस्तावेज है। 'रस सिद्धांत' को जब हम वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखते हैं, तो यह भावनाओं के प्रबंधन और उनके शारीरिक प्रभाव का एक सटीक 'फॉर्मूला' प्रतीत होता है। नाट्यशास्त्र का रस सिद्धांत इस वैज्ञानिक सत्य पर आधारित है कि मानव मन और शरीर अलग-अलग नहीं है। अभिनय के माध्यम से उत्पन्न विभाव और अनुभाव हमारे स्नायु तंत्र को प्रभावित करते हैं, जिससे एक सौंदर्यात्मक आनंद की उत्पत्ति होती है जिसे भरत मुनि 'ब्रह्मानंद सहोदर' कहा है।

#### संदर्भ:

- भाषा विज्ञान, डॉ. भोलानाथ तिवारी, पृष्ठ, 475
- साहित्य शास्त्र, डॉ. ओमप्रकाश गुप्त - डॉ. गोवर्धन बंजारा, पृष्ठ, 39
- साहित्य शास्त्र, डॉ. ओमप्रकाश गुप्त - डॉ. गोवर्धन बंजारा, पृष्ठ, 40
- साहित्य शास्त्र, डॉ. ओमप्रकाश गुप्त - डॉ. गोवर्धन बंजारा, पृष्ठ, 41
- <https://testbook.com/ugc-net-hindi/ras-siddhant>
- <https://uou.ac.in/sites/default/files/slm/MPAM-505.pdf>